वार्तालाप-508, संगमनेर (महाराष्ट्र), ता-5.2.08
Disc.CD No.508, dated 5.2.08 at Sangamner (Maharashtra)

7.25-8.10

जिज्ञासु- बाबा मुरली में बोला है ज्ञान अंत तक रिफाइन होता रहता है। तो ज्ञान के किसी भी पॉईंट को कहाँ तक पक्का करना चाहिए?

बाबा- कहाँ तक पक्का करना चाहिए? जब तक जीना है तक तक पक्का ही करते रहना चाहिए। जब बता दिया कि ज्ञान इतना अखुट है कि सारे सागर की स्याही बनाओ और सारे जंगल की कलम बनाओ तो भी? तो भी पूरा नहीं होता है। अंत नहीं है इसका। जब देहभान का अंत हो जायेगा तो ज्ञान का भी अंत हो जायेगा। इसलिए जब तक देहभान में जीना है तब तक पीना है।

Time: 7.25-8.10
Student: Baba, it has been said in the Murli that the knowledge undergoes refining till the end. So, to what extent should we make any point of knowledge firm?
Baba: To what extent should we make it firm? Until we are alive, we have to keep making it firm. When it has been said, the knowledge is so immense that if you make the entire ocean into ink and the entire forest into pen even then…? There is no end to it. When body consciousness ends knowledge will also end. This is why until we have to live in body consciousness we have to drink (the nectar of knowledge).

8.12-10.15

जिज्ञासु- अभी जो पॉईंट रिफाइन हुआ है कुछ महीनों पहले उसमें बोला कि 2018 में कृष्ण बच्चे के रूप में बाप की साकार रूप में प्रत्यक्षता होगी और पुरानी मुरलियों में ये भी बात बोली है कि बाप निराकारी स्टेज के आधार पर इस सारे संसार में प्रत्यक्ष होगा। तो में निराकारी स्टेज के आधार पर प्रत्यक्षता होगी या साकार में कृष्ण बच्चे... कृष्ण बच्चा तो सन 36 में जन्म लेगा लेकिन संगमयुगी कृष्ण के रूप में प्रत्यक्षता होगी, तो संगमयुगी कृष्ण निराकारी स्टेज वाला होगा क्या?

Time: 8.12-10.15
Student: Recently a point which was refined few months ago, in that it was said that the Father will be revealed in a corporeal form, in the form of child Krishna in 2018 and it was also said in old Murlis that the Father will be revealed in the entire world on the basis of the incorporeal stage. So, will the revelation take place in 2018 on the basis of the incorporeal stage or the child Krishna in corporeal form... the child Krishna will take birth in the year (20)36, then will the revelation take place in the form of Confluence Age Krishna, so will the Confluence Age Krishna be in the incorporeal stage?

बाबा- नेक्स्ट टू ग़ॉड इज़ कृष्ण, नेक्स्ट टू ग़ॉड इज़ नारायण, नेक्स्ट टू ग़ॉड इज़ शंकर, नेक्स्ट टू ग़ॉड इज़ प्रजापिता। तो चारों ही जो नाम हैं वो एक व्यक्ति को, एक पर्सनैलिटी को इंट्रोड्युस कर रहे हैं या अलग-2 पर्सनैलिटीज़ है? एक ही है। जो प्रजापिता है वो साकारी स्टेज का नाम

है, पतित का नाम है। जो शंकर है वो आकारी स्टेज का नाम है, मनन चिंतन मंथन वाली आकारी स्टेज। जो कृष्ण बच्चा है वो 16 कला सम्पूर्ण स्टेज का नाम है और नारायण संपन्न परिपूर्ण स्टेज का नाम है, व्यक्ति एक ही है। तो अलग-2 नहीं कर सकते।

जिज्ञासु- लेकिन बाबा जो निराकारी स्टेज वाला शिव है और अभी जो साकार में आया हुआ है फिर उसकी प्रत्यक्षता?

बाबा- नेक्स्ट टू ग़ॉड इज़ शंकर किसे कहा? शिव को ही तो कहा है। शंकर सम्पूर्ण स्टेज वाला या अपूर्ण स्टेज वाला? सम्पूर्ण स्टेज वाला।

Baba: Next to God is Krishna, next to God is Narayan, next to God is Shankar, next to God is Prajapita; so, do all the four names introduce the same person, the same personality or different personalities? It is the same [personality]. Prajapita is the name of the corporeal stage, the name of the sinful one. Shankar is the name of the subtle stage, the subtle stage of thinking and churning. The child Krishna is the name of the stage complete with 16 celestial degrees and Narayan is the name of the complete, perfect stage. The person is the same. So, you cannot separate them.

Student: But Baba, what about the revelation of Shiv who is in the incorporeal stage [and] who has come in corporeal form?

Baba: For whom was it said, Next to God is Shankar? It was said about Shiv Himself. Is Shankar in a complete stage or incomplete stage? He is in a complete stage.

10.20-16.50

जिज्ञासु- बाबा जब लक्ष्मी का पार्ट शुरु हो जायेगा तो लक्ष्मी से ज्ञान सुनेंगे क्या?

बाबा- एक होता है, भगवान को पहचान तो लिया लेकिन बीच-2 में अनिश्चय आता रहता है। क्या? बीच-2 में क्या आता रहता है? अनिश्चय। क्यों आता रहता है? कोई कारण होगा? अनिश्चय क्यों आता रहता है? (किसी ने कहा- ज्ञान की कमी) नहीं। चाहे ब्रह्मा के द्वारा ज्ञान सुनाया जा रहा है, चाहे शंकर के द्वारा ज्ञान सुनाया जा रहा है वो जो ज्ञान है वो पुरुष तन के द्वारा सुनाया गया या जो बाबा ने निमित्त बनाया.... ज्ञान देने के लिए निमित्त किसको बनाया? कन्याओं, माताओं के द्वारा। तो निमित्त तन कौन है? पुरुष है या कन्यायें, मातायें हैं? पुरुष तन है। परंतु उस पुरुष तन में जितना जो निश्चय बुद्धि हो करके सुनते हैं तो तो फायदा है। अगर निश्चय हिल जाता, अनिश्चय हो जाता है तो फायदे के बदली.... तो दुर्योधन दुःशासन से सुना। अगर शिवबाबा से सुना तो निश्चय बुद्धि, अगर पुरुष से सुना.... सब पुरुष दुर्योधन, दुःशासन है उनमें ब्रह्मा और शंकर आता है या नहीं है? वो भी आता है। सब माना सब। तो दुर्योधन दुःशासन से सुना और लक्ष्मी से सुना। लक्ष्मी 84 जन्म में अव्यभिचारी पार्ट बजाने वाली और शंकर और ब्रह्मा राजा बनते हैं कि नहीं बनते हैं?

Time: 10.20-16.50

Student: Baba, when Lakshmi's part begins, will we listen to knowledge from Lakshmi?

Baba: One situation is where someone has recognized God but keeps having doubts in between. What? What do they keep having in between? [They keep having] doubts. Why do they have doubts? There must be some reason. Why do they keep having doubts? (Someone said: Lack of knowledge) No. Whether knowledge is being narrated through Brahma or through Shankar; was

that knowledge narrated through a male body or through the one whom Baba has made an instrument….. Who has been made an instrument for giving knowledge? Through the virgins, mothers. So, which body is the instrument? Is it a male [body] or [is it the body of] virgins, mothers? The male body. But, the more someone listens through that male body with faith, the more beneficial it is for them. If someone's faith shakes, if they become faithless, then instead of benefit… then, they heard from Duryodhan and Dushasan. If they listened [to knowledge] from Shivbaba then [they] are the ones with a faithful [intellect], if they listened through a male [body]… then all men are Duryodhan, Dushasan. Are Brahma and Shankar included in that or not? They are included, too. Everyone means everyone. So, if someone hears from Duryodhan, Dushasan and if someone hears from Lakshmi. Lakshmi plays an unadulterated part in 84 births and, do Shankar and Brahma become kings or not?

जिज्ञासु- लेकिन सुनाने वाला तो सुप्रीम सोल है।

बाबा- वो सुनाने वाला सुप्रीम सोल है। निश्च्य रहता है लगातार कि भटकते हैं इधर उधर? ... (बिल्कुल नहीं।) ब्रह्मा की आत्मा पहले निश्चय बुद्धि बनेगी कि कोई दूसरा बच्चा पहले निश्चय बुद्धि हमेशा के लिए

बन जायेगा? (सभी- ब्रह्मा की आत्मा) फिर? दो-2 बातें क्यों करते हो?

जिज्ञासु- लेकिन बाबा अभी प्रैक्टिकल में तो एडवांस पार्टी के ढ़ेर बच्चे बाप के ऊपर निश्चय बुद्धि है ब्रह्मा के मुकाबले।

बाबा- नहीं। अभी परीक्षा बाकी है। अभी फाउंडेशन है नई दुनिया का अडंरग्राउंड। वो सबको दिखाई नहीं पड़ता जब तक परीक्षा न हो जाये तब तक कोई मानने वाला नहीं है।

Student: But the one who narrates is the Supreme Soul.

Baba: The one who narrates is the Supreme Soul. Do you have faith constantly or do you keep wandering here and there? (The student said: not at all) Will the soul of Brahma become the one with a faithful intellect first of all or will any other child have a constantly faithful intellect? (Everyone said: the soul of Brahma) Then? Why do you speak two things?

Student: But Baba, when compared to Brahma, numerous children of the advance party have a faithful intellect about the Father now in practical.

Baba: No. The examination is yet to take place. Now the foundation of the new world is underground. It is not visible to everyone. Until the test takes place nobody is going to accept it.

जिज्ञासु- परीक्षा कौनसी?

बाबा- फाईनल पेपर हो गया क्या? नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा का फाइनल पेपर चाहिए। तब पता चले जब ऐसी स्टेज आ जाये कि बाप, बाप के रूप में सहयोगी न बचे, पत्नी, पत्नी के रूप में सहयोगी न रहे, पति, पति के रूप में सहयोग देने वाला न रहे। जैसे पाकिस्तान, हिन्दुस्तान का बंटवारा हुआ था तो यही पता नहीं चला कि हमारा पति कहाँ चला गया भाग के, अपनी जान बचा के और भाई कहाँ चला गया और बाप कहाँ चला गया। अंत में ऐसी स्टेज आयेगी एक शिवबाबा दूसरा न कोई, कोई मददगार नहीं रहेगा किसीका। अभी तो अपने-2 में सब पकड़-2 के लिपटे हुए हैं।

Student: Which test?
Baba: Is the final paper over? They should give the final paper of *nashtomoha smritirlabdha*[1] . Then it will be known. When such a stage comes that a father is no more a helper in the form of a father, when a wife does not remain a helper in the form of a wife, when a husband does not help in the form of a husband; for example, when the partition of India and Pakistan took place, they did not know where their husband ran away to save his own life or where their brother had gone or where their father had gone. In the end, such a stage will come, where 'one Shivbaba and no one else'; nobody will help anyone. Now everyone is entangled in 'mine', 'mine'.

जिज्ञासु- तो उस फाइनल परीक्षा में ब्रह्मा की आत्मा फुल पास हो जायेगी?

बाबा- ब्रह्मा की आत्मा किसी शरीर के द्वारा पार्ट बजाती है....

जिज्ञासु- जगदम्बा के द्वारा पास हो जायेगी?

बाबा- ना। वो क्या 8 देवों में हैं?

जिज्ञासु- जगदम्बा 8 देवों में नहीं है लेकिन बाबा अभी आपने कहा न कि ब्रह्मा की आत्मा का पहला नम्बर लगेगा।

बाबा- पहला नम्बर किसी शरीर के द्वारा है ना? माना चन्द्रमाँ सिर्फ महाकाली को ही दिखाते हैं? मस्तक में जो चन्द्रमाँ है वो सिर्फ महाकाली को ही दिखाते हैं?

जिज्ञासु- वो तो बाप का पार्ट है।

बाबा- महाकाली?

जिज्ञासु- महाकाली नहीं। माना चन्द्रमाँ की जो आप बात कर रहे हैं न बाबा नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा.....(कोई बीच में कुछ बोला)

Student: So, will the soul of Brahma fully pass in that final exam?
Baba: Does Brahma's soul play part through someone's body…
Student: Will he pass through Jagdamba?
Baba: No. Is she included among the eight deities?
Student: Jagdamba is not included among the eight deities, but Baba, you said just now that Brahma's soul will be number one.
Baba: The number one is through someone's body, isn't he? Does it mean that the Moon is shown only on Mahakali? Is the Moon shown only on the forehead of Mahakali?
Student: That is the Father's part.
Baba: Mahakali?
Student: Not Mahakali. I mean to say, the Moon about which you are talking Baba; *nashtomoha smritirlabdha*…… (Someone interrupts)

बाबा- एक आदमी बात करो न दोनों क्यों बात कर रहे हैं? हाँ?

जिज्ञासु- नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा ब्रह्मा की आत्मा बाप में प्रवेश करके...

बाबा- ब्रह्मा की आत्मा अपना शरीर रहते तो नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा नहीं बनती लेकिन वो

[1] Stage of conquering attachment and being in the remembrance of the one Father.

आत्मा कोई शरीर में प्रवेश करके तो नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा बनती है।

जिज्ञासु- फिर वो शरीर कौन है?

बाबा- वो ही राम वाली आत्मा।

जिज्ञासु- लेकिन बाबा वो तो सुप्रीम सोल का साकार रथ है।

बाबा- सुप्रीम सोल का साकार रथ है सो क्या हुआ?

Baba: One of you speak. Why are both of you speaking? Hm?
Student: Brahma's soul achieves the stage of *nashtomoha smritirlabdha* after entering the Father…..
Baba: Brahma's soul does not become *nashtomoha smritirlabdha* while being in his body, but that soul enters a body and becomes *nashtomoha smritirlabdha.*
Student: Then, which is that body?
Baba: The very soul of Ram.
Student: But Baba, that is the corporeal chariot of the Supreme soul.
Baba: What if it is the corporeal chariot of the Supreme Soul?

जिज्ञासु- वो नष्टोमोहा कैसे साबित होगा वो....

बाबा- माना जो साकार रथ है वो पुरुषार्थ नहीं करता?

जिज्ञासु- उसका तो 76 में ही पूरा हो गया है ना पुरुषार्थ?

बाबा- हाँ, तो अभी रुका हुआ किसके लिए है वो बाप? वो मनुष्य सृष्टि का बाप किसके लिए रुका हुआ है? (सभी- बच्चों के लिए) अरे, बच्चे तो 500 करोड़ है उसके (किसी ने कहा- उस एक बच्चे के लिए रुका हुआ है) हाँ एक बच्चे के लिए रुका हुआ है ना? जो बच्चा अभी अधूरी स्टेज में है वो सम्पूर्ण चन्द्रमाँ बनेगा या नहीं बनेगा? बनेगा। जब तक बच्चा सम्पूर्ण चन्द्रमाँ न बने तब तक ब्रह्मा सो विष्णु नहीं कहा जा सकता। बच्चे को साथ लेकरके चलना है।

Student: How will he prove to be *nashtomoha*…….
Baba: Does it mean that the corporeal chariot does not make any purusharth (spiritual effort)?
Student: His spiritual efforts were completed in the year (19)76 itself, weren't they?
Baba: Yes; so for whom is that father waiting now? That father of the human world is waiting for whom? (Everyone said: for the children) Arey, he has 5 billion children (Someone said: He is waiting for that one child) Yes, he is waiting for that one child, isn't he? The child who is now in an incomplete stage; will he become a full Moon or not? He will. Until that child becomes a full Moon, Brahma cannot be said to have become Vishnu. The child has to be taken along.

जिज्ञासु- तो वो ही ब्रह्मा की सोल छोटी मम्मी के चोले द्वारा कार्य करेगी?

बाबा- अधूरी है तब तक कर रही है। जब तक ज्ञान पूरा नहीं है तो अम्मा-3 और जब ज्ञान पूरा हो जाए, बाप की पहचान हो जाए, गीता का भगवान कौन, ये पक्का निश्चय बुद्धि में बैठ जाए गीतापति भगवान कौन, कौन है प्रैक्टिकल में साकार रूप जो गीता ज्ञान दाता है तो कहाँ पहुँच जायेगी? (जिज्ञासु- बाप के पास) अभी तो गुल्जार दादी में भी जाती है।

Student: So, the same soul of Brahma will work through the body of the junior mother?
Baba: It is working (through others) as long as it is incomplete. As long as the knowledge is incomplete, there is 'mother, mother, mother' and when the knowledge becomes complete,

when he has recognized the Father, when it firmly sits into the intellect who God of the Gita is, who God the husband of the Gita is, who is the corporeal form in practice who is the giver of knowledge of the Gita, then where will he reach? (Student: Near the Father) Now he also goes to Gulzar Dadi.

17.15-19.30

जिज्ञासु- बाबा पूरा सरेंडर किसको कहते हैं?

बाबा- पूरा माना तन भी पूरा तेरा, मन भी पूरा तेरा। श्रीमत के बरखिलाफ कोई संकल्प भी न चले। क्या? तन भी पूरा तेरा। इस तन को जहाँ जैसे चलाना चाहे वैसे चले और धन भी पूरा तेरा माना एक पैसा भी श्रीमत के बरखिलाफ नहीं लगा सकते। एक पैसे का भी महत्व है अगर श्रीमत के अनुकूल लगे तो। अपनी मनमत पर लगाय दिया, मनुष्यों की मत पर लगाय दिया तो उसको श्रीमत के अनुकूल नहीं कहेंगे। सम्पूर्ण अर्पणमय नहीं कहा जायेगा। फिर है समय सबसे ज्यादा वैल्युबल। समय का एक-2 सेकेण्ड भी ईश्वरीय सेवा के अलावा न जाये। जैसे बाप चाहते हैं वैसे ही लगे। फिर सम्पर्क और सम्बन्ध। ये देह के जो भी सम्बन्धी हुए हैं, जिनसे-जिनसे सम्बन्ध जोड़ा है साकार जीवन में वो सम्बन्धों की सारी ताकत ईश्वरीय सेवा में लगाना। क्या? वो सम्बन्धी हमारा सम्बन्धी तब तक है जब तक वो सारे सम्बन्ध की ताकत ईश्वरीय सेवा में न लगे। अगर वो सेवा में नहीं लगता तो वो सम्बन्धी हमारा सम्बन्धी नहीं है। ऐसे ही सम्पर्की। सम्पर्की तो ढ़ेर होते हैं, सम्पर्क में आने वाले जिन्दगी में। तो जिनसे-2 सम्पर्क हुआ है उन सबको ईश्वरीय सन्देश दे देना। कोई ऐसा न बचे जिसको ईश्वरीय सन्देश न मिले।

Student: Baba, who is said to be completely surrendered?

Baba: Complete means that 'the body is completely yours [the Father's]' as well as 'the mind is completely yours'. There should not be any thought against *shrimat*. What? 'The body is also completely yours'. This body should work in whatever way [the Father] wants it to work and 'the wealth is also completely yours', i.e. you cannot invest even a single paisa against *shrimat*. Even a paisa is important if it is invested in accordance with *shrimat*. If you invested it on the basis of your own opinion, if you invested it on the basis of the opinion of people, then it will not be said to be in accordance with *shrimat.* [Then] you will not be said to be completely surrendered (dedicated). Then, time is the most valuable thing. Every second of your time should not be spent without the service of God. It should be used in whatever way the Father wants it to be used. Next are contacts and relationships. All the relatives of the body with whomsoever you have established a relationship in the corporeal life, the entire power of those relationships should be invested in service of God. What? That relative is our relative until the entire power of that relationship is used in service of God. If it is not used in service, then that relative is not our relative. Similar is the case with contacts. There are numerous people who come in our contact during our life. So, all those with whom we come in contact should be given the message of God. There should not be anyone who does not get the message of God.

19.34-23.57

जिज्ञासु- बाबा, सतयुग में तो स्वयंवर नहीं होता लेकिन लक्ष्मी नारायण के चित्र में नीचे लिखा है स्वयंवर पूर्व महाराजकुमार कृष्ण और महाराजकुमारी राधा।

बाबा- ये जो लक्ष्मी नारायण के चित्र में राधा कृष्ण को दिखाया है वो राधा कृष्ण वास्तव में जो टेढ़े खड़े हुए हैं, बांसुरी बजाय रहे हैं वो संगमयुग का चित्र है या सतयुग की यादगार है? (किसीने कहा- सतयुग की यादगार है) सतयुग की कोई यादगार होती भी है? सतयुग की कोई हिस्ट्री होती ही नहीं। शास्त्रों में न सतयुग की कोई हिस्ट्री है, न त्रेता की कोई हिस्ट्री है और बाबा ने भी जो लक्ष्य दिया हुआ है वो सतयुग का लक्ष्य दिया है या संगमयुग का लक्ष्य दिया है? कहाँ का लक्ष्य दिया है? संगमयुग का लक्ष्य दिया है माना कृष्ण की आत्मा जो सतयुग में बाप का बच्चा बनेगी, सतयुग का सोलह कला सम्पूर्ण वर्सा लेगी उसका भी नूँध कहाँ करती है? अभी नूँध कर रही है। सिर्फ कमी इतनी रह गई कि अपने शरीर से नहीं प्राप्ति कर सकी इसलिए बाप से शरीर का जन्म मिलेगा फिर प्राप्ति करेगी। तो जो राधा कृष्ण दिखाये गये हैं उनमें संस्कार रहेंगे दृष्टि के। क्या? कौनसे संस्कार रहेंगे? वो दृष्टि का प्यार छोड़ नहीं सकेंगे और उनको बुद्धि रूपी पेट में पालना देने वाली जो आत्मायें हैं वो कौन है? शंकर पार्वती। वो ऐसी स्टेज पर पहुँच जावेंगे कि उन्हें दृष्टि से भी एक दूसरे कि तरफ देखने की इच्छा (सभी- नहीं रहेगी) इच्छा मात्रम अविद्या। वायब्रेशन से ही वो राधा कृष्ण जैसे बच्चों को जन्म देने वाले बनेंगे। तो कलातीत कहा जाता है।

Time: 19.34-23.57

Student: Baba, there is no *swayamwar* in the Golden Age, but it has been written in the picture of Lakshmi-Narayan – *Maharajkumar* Krishna and *Maharajkumari* Radha before *swayamwar*.

Baba: Radha and Krishna who have been shown in the picture of Lakshmi and Narayana, those Radha and Krishna, who are standing in a crossed/slanting position, and are playing the flute are actually memorial of the Confluence Age or of the Golden Age? (Someone said : It is a memorial of the Golden Age) Is there any memorial of the Golden Age? There is no history of the Golden Age at all. There is no history of either the Golden Age or the Silver Age and whatever goal Baba has set for us, is it a goal of the Golden Age or of the Confluence Age? A goal of which place/ has been given? He has set a goal of the Confluence Age for us. It means that where does the soul of Krishna, who will become the child of the Father in the Golden Age and obtain the complete inheritance of being complete with 16 celestial degrees in the Golden Age? It is doing rehearsal now. The only shortcoming is that he could not achieve the attainment/fruit through this body; this is why he will be born from the Father, then he will achieve attainments. So, Radha and Krishna who have been shown will have *sanskars* of vision/seeing through the eyes. What? Which *sanskars* will they have? They will not be able to leave the love through vision and who are the souls who give them sustenance in the womb-like intellect? Shankar Parvati. They will reach a stage where they will not have any desire even to look at each other (Everyone said: will not have) *Ichcha maatram avidya*. They will give birth to children like Radha and Krishna through the vibrations only. So, they are called *kalaateet* (beyond celestial degrees).

जिज्ञासु- तो प्रैक्टिकल पार्टी सारा वायब्रेशन से ही करेगी क्या? प्रैक्टिकल में आयेगी नहीं एडवांस में? आपने तो कहा भट्टी करेगी वो।

बाबा- भट्टी करने का मतलब क्या हुआ? माना भट्टी करने का मतलब क्या समझते हैं? जब आये प्रैक्टिकल भट्टी करे तो क्या मतलब वो जैसे अभी संसर्ग सम्पर्क में सब आ रहे ऐसे आना जरूरी है?

जिज्ञासु- तो भट्टी भी उनकी वायब्रेशन से ही होगी क्या?

बाबा- जो बच्चे भट्टी कर रहे हैं अभी और बाबा को नहीं देख पाया है वो बाबा के बच्चे नहीं बने हैं? बने हैं। ये तो कोई बात नहीं है। बाबा तो कहते हैं ज्ञान लेकरके, कोर्स लेकरके, भट्टी करके भल विलायत में चला जाये। तो भी विश्व का मालिक बन सकता है।

जिज्ञासु- तो जिसने भट्टी नहीं की और बाबा को मिले हो?

बाबा- तब तक तो भगत है ना? वो देखने की इच्छा है ना? इस आँखों से दिखाई पड़ता है भगवान? जो भगवान है वो इन आँखों से दिखाई पड़ता है? दिखाई तो पड़ता नहीं। इन आँखों से भगवान को नहीं देखा जाता। भगवान को तो ज्ञान के तीसरे नेत्र से ही देखा जा सकता है और तीसरा नेत्र से जो देखता है उनको इन आँखों से देखने की लालसा नहीं रहती। हाँ ये हैं कि बाप का बच्चा बनता है तो बाप का फर्ज़ है बच्चे को देखे जाके।

Student: So, will the practical party do everything through vibrations? Will it not come to the advance party in practical? You said that it will undergo *bhatti.*

Baba: What is meant by undergoing *bhatti*? What do you think is the meaning of undergoing *bhatti*? Does it mean that when they come in practical and do *bhatti*… is it necessary for them to come just like people are coming in contact now?

Student: So, will they undergo *bhatti* through vibrations?

Baba: The children who are undergoing *bhatti* at present and are unable to see Baba; have they not become Baba's children? They have. It is not the thing. Baba says: someone may obtain knowledge, undergo the *course*, do *bhatti* and go abroad, yet he can become the master of the world.

Student: So, if someone has not undergone *bhatti* and has met Baba?

Baba: Till then he is a devotee, isn't he? That is a desire to see, isn't it? Can God be seen through these eyes? Is God visible through these eyes? He is not visible at all. God cannot be seen through these eyes . God can be seen only through the third eye of knowledge and the one who sees through the third eye of knowledge does not have any desire to see through these eyes. But it is true that if he has become the Father's child, then it is the Father's duty to go and see the child.

24.20-25.28

जिज्ञासु- अव्यक्त बापदादा का मधुबन में कब तक पार्ट है?

बाबा- तुम्हारे ऊपर वजन क्या पड़ रहा है? अरे, उससे तो हमारा फायदा ही है। जो भी कुछ गुल्जार दादी के द्वारा महावाक्य निकल रहे हैं वो मुरली के बरखिलाफ निकल रहे हैं या पैरेलल निकल रहे हैं? सारे महावाक्य पैरेलल है। क्रॉस करने वाले महावाक्य तो कोई है ही नहीं। तो उनसे तो हमको नई-2 बातें मिल रही है। इतना उतावलापन क्यों हो रहा है? "अरे, कब तक ये आते रहेंगे?" एक सीधी सी बात है, जो हमारा कर्तव्य है बाप को प्रत्यक्ष करना, ज्ञान सूर्य को प्रत्यक्ष करना वो नहीं करना ये चन्द्रमाँ कब अस्त हो जायेगा? अरे, सूर्य जब उदय होगा एक

तरफ तो चन्द्रमाँ दूसरी तरफ? पूर्णिमा का चन्द्रमाँ अस्त हो जायेगा। एक तरफ जब तक सूर्य उदय न हो तब तक चन्द्रमाँ अस्त कैसे हो जाये? इतने ढ़ेर सारे जो बी.के पड़े हुए हैं ये तो कहाँ जायेंगे?

Time: 24.20-25.28
Student: Till when will Avyakta Bapdada play a part at Madhuban?
Baba: What burden are you feeling [due to that]? Arey, we are benefiting from that anyway. Whatever great sentences (mahavakya) are being spoken through Gulzar Dadi, are they being spoken against Murlis or are they parallel (to the Murlis)? All the *mahavakya* are parallel (to the Murlis). No *mahavakya* crosses (the Murlis) at all. So, we are getting newer points from them. Why are you being so impatient 'Arey, how long will he continue to come'? It is a simple thing. Our duty is to reveal the Father, to reveal the Sun of knowledge; instead of doing that [we are thinking] when this Moon will set? Arey, when the Sun will rise on one side, on the other side the Moon…? The Full Moon will set. Until the Sun rises on one side, how can the Moon set? There are numerous BKs; where will they go?

25.31-27.27

जिज्ञासु- बाबा, एडवांस पार्टी में बाबा मुरलियों में जो जिन -2 बच्चों की बहुत महिमा करते हैं, जैसे जगदम्बा की आत्मा या ब्रह्मा की आत्मा या गंगा की आत्मा। तो वो आत्मायें भी बहुत निश्चय अनिश्च्य के चक्र में आते हैं।

बाबा- क्यों नहीं आती हैं? जिसको अनिश्च्य का चक्र नहीं होगा, निश्चय बुद्धि होंगे। जिनको निश्चय बुद्धि होगा तो वो बाप से मिलने की लालसा रखेंगे कि नहीं रखेंगे? रखेंगे। थोड़ा भी अनिश्चय होगा "मिले मिले न मिले अपने घर बैठे"। जिनको निश्चय होगा वो मिले बिगर रह नहीं सकते।

Time: 25.31-27.27
Student: Baba, in the advance party, there are children whom Baba praises a lot in the Murlis, for example, the soul of Jagdamba or the soul of Brahma or the soul of Ganga; but even those souls pass through the cycle of faith and doubt a lot.
Baba: Why will they not pass through it? Will the ones who do not pass through the cycle of doubt, those who have faithful intellect, those who have faithful intellect have the desire to meet the Father or not? They will. Even if they have a little doubt, 'they may meet, they may not meet or they may sit at home'. Those who have faith cannot remain without meeting (the Father).

जिज्ञासु- बाबा, मेरा सवाल ये था कि एडवांस पार्टी में बाबा जिन बच्चों की ज्यादा महिमा करते हैं तो इन महिमा का फायदा वो आत्मायें लेते क्यों नहीं है? जितनी महिमा इन बच्चों की है आदि से एडवांस पार्टी में उतनी तो बाबा ने दूसरे बच्चों की इतनी नहीं की जितनी इनकी की है। फिर भी ये आत्मायें बाबा से दूर हैं या एडवांस पार्टी से थोड़ी दूर हैं।

बाबा- अच्छा, सबसे जास्ती महिमा बाप जो है, मुरली में, ब्रह्मा बाबा के द्वारा जो मुरली चली है सबसे जास्ती महिमा हीरो पार्टधारी की की है या किसी दूसरे की की है? हीरो पार्टधारी की सबसे जास्ती महिमा। फिर वो सन 68 तक ज्ञान में क्यों नहीं चली?

जिज्ञासु- वो तो दुबारा जन्म लेके आता है ना...

बाबा- तो ऐसे ही बादमें आयेंगे ना। सबका अपना-2 टाईम है निश्चयबुद्धि बनने का। कोई अभी निश्चयबुद्धि बैठे हुए हैं। किसी का पता है कल क्या होने वाला है?

Student: Baba, my question was that in the advance party, why don't the children, the souls whom Baba praises a lot take benefit from this glory? Baba has not praised other children from the beginning of the advance party as much as He praised these children. Yet, these souls are far from Baba or far from the Advance Party.

Baba: OK, has the Father praised the hero actor more than anyone else in the Murlis narrated through Brahma Baba or has He praised anyone else? He has praised the hero actor the most. Still, why did he not enter the path of knowledge till (19)68?

Student: He takes rebirth and comes, does he not?

Baba: So, similarly, they will come later on, won't they? The time is fixed for everyone to become the one with a faithful intellect. Some have become the ones with a faithful intellect now. Do you know what is going to happen to anyone tomorrow?

27.30-28.35

जिज्ञासु- बाबा शुरु में जो भट्टी बनी थी फिर वो कराची में गये। शुरु में, जब ब्रह्मा बाबा थे तो कराची में गये तो कुछ बच्चे राम बाप के साथ गये तो वो कंटिन्यु नहीं आगे रहे क्या?

बाबा- हाँ?

जिज्ञासु- जैसे वो ब्रह्माकुमारी दल कंटिन्यु आगे रहा वो कराची से माउंट आबू आ गये। तो शुरु में जो बच्चे राम बाप के साथ गये थे।

बाबा- साथ गये माना आगे पीछे जाते रहे। कोई जरूरी नहीं कि उसी समय चले गये।

जिज्ञासु- तो उनका संगठन नहीं बना क्या?

बाबा- ये संगठन नहीं है? ये संगठन नहीं है क्या?

Time: 27.30-28.35

Student: Baba, *bhatti* was organized in the beginning and then they shifted to Karachi. In the beginning, when Brahma Baba was alive, he went to Karachi; then some children went with Father Ram; so did they not continue further?

Baba: Hm?

Student: Just as Brahmakumari group continued further, they shifted from Karachi to Mount Abu. So, the children who went with Father Ram in the beginning....

Baba: They went with him means that they went before or after him. It is not necessary that they went at the same time.

Student: So, did they not form a gathering?

Baba: Is this not a gathering? Is this not a gathering?

जिज्ञासु- शरीर छोड़ के दूसरा जन्म लिया ना?

बाबा- तब ही तो दूसरा जन्म लिया है। पहले थे यज्ञ में। अगर यज्ञ में थे नहीं और यहाँ नये-2 आ गये बी.के में चले ही नहीं तो कैसे नहीं? पहले थे तब तो आये हैं।

जिज्ञासु- डायरेक्ट एडवांस।

बाबा- हाँ जी। एडवांस में यहाँ डायरेक्ट कोई नहीं आता । ऐसा कोई नहीं होता जो प्राईमरी स्कूल न पढ़े, जूनियर हाई स्कूल न पढ़े और सीधा बी.ए. में दाखिल हो जाये। दाखिल किया जायेगा? नहीं किया जायेगा।

Student: They left their bodies and took rebirth, didn't they?

Baba: Only then did they take rebirth. Earlier they were in the yagya. How is it possible if they were not present in the yagya and came here newly and did not follow the basic knowledge at all? They were there (in the yagya) in the past, only then have they come.

Student: Direct Advance.

Baba: Yes. Nobody comes directly to Advance here. There is nobody who is admitted directly to BA (Bachelor of Arts - a graduate's degree) without studying in a Primary school, Junior High School. Will he be admitted there? He will not.

28.40-29.55

जिज्ञासु- बाबा, शिव पिता अमन है तो बिना संकल्प के फिर कैसे कार्य करता है?

बाबा- सतयुग में मन होगा या नहीं होगा? मन चलेगा? कोई मनचला होगा? (सभी- नहीं) सतयुग में इच्छायें होंगी? (सभी- नहीं होगी) वहाँ सतयुग में देवताओं को ही इच्छा नहीं होती है, मन नहीं होता है, मन मर्ज हो जाता है तो फिर जो देवताओं को बनाने वाला भगवान है उसको मन होने की क्या दरकार? हाँ, हर आत्मा में, हर आत्मा रूपी रेकॉर्ड में अपना टाईम है। उस रेकॉर्ड पर जब सुई पहुँचेगी तो वो वो ही गीत बजेगा। ऐसे ही शिव की आत्मा भी एक रेकॉर्ड है। मैं भी इस ड्रामा के बन्धन में बान्धा हुआ हूँ। जब टाईम पूरा होता है उनका 5000 वर्ष का उनको तलख हो जाती है आना ही आना है।

Time: 28.40-29.55

Student: Baba, the Father Shiv is *aman* (one who does not have mind); so how does He work without thoughts?

Baba: Will there be mind in the Golden Age or not? Will the mind work? Will there be anyone whose mind is not under his control? (Everyone – No) Will there be desires in the Golden Age? (Everyone – No) There, in the Golden Age, even the deities do not have any desire at all. They do not have mind, the mind becomes merged (has no thoughts); so, will God, who makes deities require a mind? Yes, every soul, every soul-like record has its own time. When the needle reaches a record, it will play that very song. Similarly the soul of Shiv is also a record. 'I am also bound in this drama'. When the time of 5000 is over, He becomes impatient; he has to come.

30.00-31.28

जिज्ञासु- बाबा, जैसे बाबा के लिए लागू होता है प्लैन, 76 से 81 तक, फुल बेगर टू फुल प्रिंस....

बाबा- पंच वर्षीय योजना की बात?

जिज्ञासु- हाँ, तो वैसे ही बच्चों के लिए कब लागू होती है?

बाबा- उनका अपना-2 नम्बरवार है। जो बच्चा पेट के लिए चिंता न करे.... प्रिंस होता है उसको पेट की कमाई की चिंता होती है? नहीं होती है। तो ऐसे ही यहाँ बेहद में जिन बच्चों को अपनी पेट की कोई चिंता न रहे, हम तो फुल बेगर टू क्या बन गये? फुल प्रिंस बन गये। तो कहाँ काम करेगा फिर? ईश्वरीय सेवा में ही लगा रहेगा। खाने के लिए, पुरुषार्थ करने के लिए क्या चाहिये? सिर्फ दो रोटी चाहिए। कपड़ा भी न मिले तो कोई हर्जा नहीं लंगोट लगाये रहो। भाईयों के लिए तो कोई खास बात नहीं। चलेगा कि नहीं? पुरुषार्थ होगा कि नहीं होगा? (सभी- होगा) फिर? तो ऐसे जो बेगर टू प्रिंस बनते जावेंगे वो फिर 108 की लिस्ट में आते जावेंगे। जो बाप के लिए सो बच्चों के लिए भी है। वो ही रास्ता है।

Time: 30.00-31.28

Student: Baba, for example, the plan of full beggar to full prince is applicable to Baba from (19)76 to (19)81....

Baba: Are you talking about the five year plan?

Student: Yes, so when is it applicable to the children?

Baba: For them it is according to their own capacity. The child who does not worry about his stomach..... Suppose there is a prince, does he worry about his livelihood? He does not. So, similarly, here in an unlimited sense, the children who do not at all worry about their stomach and think that they have transformed from a full beggar to… what? Full prince. Then where will he work? He will remain busy in the service of God. What is required for eating, for making spiritual effort (*purusharth*)? Only two *rotis* are required. It does not matter if you do not get clothes, you may wear a *langot* (underwear). It is not a big issue for the brothers. Will it be sufficient or not? Will you be able to make *purusharth* or not? (Everyone said: We can) Then? So, similarly, those who go on transforming from beggar to prince will go on entering the list of 108. Whatever is applicable to the Father is applicable to the children as well. It is the same path.

31.29-33.18

जिज्ञासु- बाबा ये बोला है कि जो स्थूल धन्धे से धन कमाया जाता है, उससे स्वर्ग की स्थापना नहीं होगी। फिर स्वर्ग की स्थापना रुहानी सेवा करने से जो धन मिलता हैं उससे होगी क्या?

बाबा- ठीक है। सब धन्धों में हैं नुकसान सिवाय ईश्वरीय धन्धे के। तो ईश्वरीय धन्धा भी जो श्रीमत पर किया जाता है और उससे जो भी धन मिलता है, बिना माँगे। क्या? माँगना इशारे से भी नहीं होना चाहिए। वाचा से तो माँगना बहुत दूर की बात।

जिज्ञासु- इशारे से भी नहीं।

बाबा- हाँ। और तीयाँ पैंचा भिड़ा करके, चंटई चर्पटटई की बातें करके धन खींच लेना वो तो बहुत खराब बात हो गई। वो तो डकैती हो गई। किसीको बेवकूफ बनाकरके धन ले लेना। जैसे कहते हैं 7000 देंगे तो सतयुग में आ जायेंगे, 3000 देंगे तो त्रेता में आ जायेंगे। तो ये बेवकूफ बनाने वाली बात हुई न? ऐसी ढ़ेर सारी बातें हैं। मन के अन्दर किसीसे लेने का संकल्प भी न आये। जो कुछ हमें स्वतः ही मिल रहा है और खुशी-2 मिल रहा है वो ही सतोप्रधान धन है, वो ही सतयुग स्थापन करेगा। बाकी माँग लिया सो यहाँ का यहीं खत्म हो जायेगा।

Time: 31.29-33.18
Student: Baba, it has been said that heaven will not be established through the wealth that is earned through physical occupations. Then, will heaven be established with the wealth that is obtained by doing spiritual service?
Baba: It is correct. There is loss in all occupations except Godly occupation. So, the Godly occupation which is done on the [basis of] *shrimat* and the wealth that is obtained through it, without asking. What? You should not ask even through gestures. Seeking through words is a far-away proposition.
Student: Not even through gestures.
Baba: Yes. And if you snatch wealth by hook or by crook or by sweet words, then that is a very bad thing. That is burglary; obtaining wealth by making someone a fool. For example, they say if you give 7000 you will come in the Golden Age, if you give 3000 you will come in the Silver Age. So, this is like making someone a fool, isn't it? There are many such things. You should not ask even through the thoughts of the mind. Whatever we are receiving automatically and happily is *satopradhan* wealth; only that will establish heaven. As regards [the wealth] that is sought will perish here itself.

41.03-42.29

जिज्ञासु- बाबा, एडवांस पार्टी में जब आत्मायें आती हैं ज्ञान में तो बाप से बुद्धि का वरदान मिलता है। माना जितना मनन चिंतन मंथन बी.के लाईफ में नहीं चलता उतना एडवांस में आने के बाद चलने लग पड़ता है। माना आत्मा एक प्रकार से अपनी बुद्धि चलाती है। लेकिन बाबा कहते हैं अपनी बुद्धि नहीं चलानी है।
बाबा- अरे, बुद्धि का वरदान मिला किससे है? (सभी- बाप से) तो जो बाप की दात है उसका उपयोग नहीं करना चाहिए?
जिज्ञासु- हाँ, करना चाहिए।
बाबा- अभी क्या कह रहे? दो-2 बातें करते हैं।
Time: 41.03-42.29
Student: Baba, when souls come in the advance party, when they enter the path of knowledge, they get the boon of intellect from the Father. It means that we start thinking and churning more than in the BK life after coming to the advance (party). It means in a way the soul uses its intellect. But Baba says: You should not use your intellect.
Baba: Arey, from whom did you receive the boon of intellect? (Everyone said: From the Father) So, should you not use the gift given by the Father?
Student: Yes, we should use.
Baba: What are you telling now? You are saying two different things.

जिज्ञासु- बाबा, मुरली में कहते हैं ना, तुम बच्चों को अपनी बुद्धि नहीं चलानी चाहिए।
बाबा- अपनी कहाँ चला रहे हैं। जो बाप ने बुद्धि दी है वो ही तो चला रहे हैं। बाप ने जो हमको बुद्धि दी है, जो मत दी है वो ही तो हम दूसरों को सुना रहे हैं। अगर मिक्स करके सुना रहे हैं तो हम अपनी मत चला रहे हैं। अगर श्रीमत में मनमत मिक्स करते हैं तो हम अपनी चला रहे

हैं। अगर मनमत मिक्स नहीं करते हैं, जो बाप ने सुनाया वही हम दूसरों को सुना रहे हैं तो हम अपनी बुद्धि कहाँ चला रहे हैं?

जिज्ञासु- नहीं वो जो पॉईंट है ना कि सबसे पहले बुद्धि से माया बेटी सरेंडर होती है।

बाबा- सरेंडर होना बात अलग है। सरेंडर होने का मतलब ये हैं कि जो भी तन है, जो भी मन है, जो भी धन है वो हम पूरा अर्पण कर दे, उस अर्पण करने में दिमाग न लगाये। क्या? कि क्या होगा अरे।

Student: Baba says in the Murlis you children should not use your intellect, doesn't He?

Baba: Are you using your own (intellect)? You are using the intellect which the Father has given you. The intellect that the Father has given us…, the opinion that the Father has given us, we are giving it to others. If we are mixing and narrating, then we are propagating our own opinion. If we mix the opinion of our mind in *shrimat*, then we are propagating ourselves. If we do not mix our opinion, if we are narrating to others what the Father has narrated to us, then where are we using our intellect?

Student: No, there is a point that first of all daughter Maya surrenders through the intellect.

Baba: To become surrendered is a different thing. To become surrendered means that we should surrender the body, the mind, the wealth completely. We should not use our intellect while surrendering. What? (We should not worry) Arey, what will happen (to me)?

42.34-46.59

जिज्ञासु- बाबा वो तिरुपति बालाजी में बहुत से लोग जाकर सोना दान देते हैं पैसे भी देते हैं। मुंडन भी करवाते हैं।

बाबा- देख लो, मूढ़` भी लिए जाते हैं और सबकुछ अर्पण भी करते हैं फिर भी मूढ़` लिए जाते हैं। इसकी शूटिंग कहाँ होती है यही पूछ रहे हो? यहीं शूटिंग होती है। तिरुपति में जो नाम पड़ा वो क्या नाम पड़ा? तेरो पति। माना उनको दो पत्नियाँ दिखाई गई है। ये दो पत्नियों की जो शूटिंग है वो कहाँ होती है? सतयुग में होती है, त्रेता में होती है? यहाँ संगम की बात है।

Time: 42.34-46.59

Student: Baba, many people go to [the temple of] Tirupati Balaji and donate gold, money and also get their heads shaved.

Baba: Look, they also shave their head and they even surrender everything, yet they are shaved. When does its shooting take place? Is this what you are asking? The shooting takes place here itself. What was the name given to Tirupati? *Tero pati* (Your husband). It means that He is shown to have two wives. When does the shooting of having two wives take place? Does it take place in the Golden Age or in the Silver Age? It is about this Confluence Age.

दो पत्नियाँ हैं, एक का नाम है श्रीदेवी अर्थात लक्ष्मी। क्या? एक का नाम है श्रीदेवी, श्री माना श्रेष्ठ देवी और दूसरी का नाम है, श्रीदेवी नहीं नाम है। उसका नाम है पद्मावती। माने पद्म का आसन है जिसपर बैठी हुई है, कमलासन है। तो कमलासन जो है वो कमल कहाँ होता है? कीचड़ में होता है। माना वो सारा जीवन भले कीचड़ में जाए लेकिन मन बुद्धि से लगन एक ही तरफ लगी रहती है। एक का ही ज्ञान सुनने और एक का ही ज्ञान सुनाने में अक्ल लगी रहती

है। भल वो धारण करे, जीवन में धारण करे या न करे लेकिन सुनना सुनाना जो है वो अच्छा जरूर लगता है। तो वो है पद्मावती और वो है श्रीदेवी।

There are two wives. The name of one of them is Shridevi, i.e. Lakshmi. What? The name of one is Shridevi; *Shri* means righteous *devi* (female deity) and the name of the other one is not Shridevi. Her name is Padmavati. It means she is sitting on a seat of lotus (*padma*). It is a seat of lotus (*kamalasan*). So, as regards *kamalasan*: where is lotus found? It is found in mire. It means that she may lead the entire life in mire, but through her mind and intellect she is attached towards only one. The intellect remains engaged in listening to and narrating the knowledge of just one. She may inculcate or she may not, but she likes listening and narrating. So, this one is Padmavati and that one is Shridevi.

श्रीदेवी किस आधार पर हो गई? श्रेष्ठ क्यों बन गई? कि सिर्फ सुनती सुनाती नहीं है लेकिन अपने जीवन में धारण भी करती है और धारण करके दूसरों को सुनाती है। इसलिए दोनो में झगड़ा चलता है। श्रीदेवी कहती है, अरे, तन से, धन से, समय से, सम्पर्क से और मन से भी ज्यादा तो रहा तेरा। मेरा कहाँ रहा? कौन? छोटी माँ जो श्रीदेवी है वो कहती है, तन में प्रैक्टिकल में तेरा है और जो भी धन ईश्वरीय सेवा में कमाया जा रहा है वो भी तेरे प्रति लगाया जा रहा है, तेरे नाम से। तन, धन सारा तेरा है और जो भी परिवार है तैयार हो रहा है वो भी तेरी सेवा में हैं तो तेरो पति है ना? प्रैक्टिकल में किसका पति है? तेरो पति है। मेरो नहीं है और पद्मावती क्या कहती है? अरे, भल तन दिखाने के लिए मेरा है, ये धन भी दिखाने के लिए मेरा है लेकिन जो दिल है वो तो तेरा है। तो जो दिल तेरा है, तो मन के संकल्पों से शूटिंग होती है ना? तो जो मन के संकल्पों से शूटिंग हो रही है वो ज्यादा जन्म तेरे को मिलेगा उसकी प्राप्ति, उसका साथ या मेरेको मिलेगा? तेरेको मिलेगा। तो तेरा ही पति है जन्म जन्मांतर का, मेरा पति नहीं है। तो दोनो की लड़ाई में बच्चे पिस जाते हैं। तो माथा मुंडवाय लेते हैं। वो अपने माथे को सम्भाल रहा है।

On what basis did she become Shridevi? Why did she become *shreshth* (righteous)? It is because she does not just listen and narrate, but she also assimilates it in her life and after assimilating, she narrates to others. This is why there is a fight between both of them. Shridevi says : Arey, through the body, through wealth, through time, through contacts and even through mind He belonged mostly to you (*tera*). He did not belong to me (*mera*). Who? The junior mother, Shridevi says: He belongs to you in practical through the body, and whatever wealth is being earned in Godly service is also being invested for you, in your name. The entire body, the entire wealth belongs to you and the family that is getting ready is also in your service; so, he is your husband (*tero pati*), isn't he? Whose husband is he in practical? He is your husband. He is not mine. And what does Padmavati say? Arey, although the body is mine for name sake, this wealth is also mine for name sake, but the heart belongs to you. So, when the heart belongs to you, then the shooting takes place through the thoughts of the mind, doesn't it? So, the shooting that is taking place through the thoughts of the mind, so, will its fruit, his company be received for more births by you or by me? You will receive it. He is your husband for many births. He is not my husband. So, the children get crushed in the fight between both of them. So, they get their heads shaved. He (the student who asked the question) is taking care of his head.

जिज्ञासु- बाबा, संगमयुग पर ये दो पत्नी दिखाया है तो ब्रॉड ड्रामा में भी ऐसा ही होता होगा?

बाबा- तो क्या हुआ? वहाँ तो चार-2 पत्नियाँ वहाँ तो पत्नियों की संख्या ही नहीं है राजाओं की।

Student: Baba, these two wives have been shown in the Confluence Age; so the same thing would happen in the broad drama?

Baba: So what? There, there are four wives… there is no [fixed] number of wives for the kings there.

47.00-48.25

जिज्ञासु- माया तो शरीर रहते बाप को पहचान नहीं पाती है। फिर सर्वशक्तिवान का टाईटल कैसे लेती है?

बाबा- शरीर रहते नहीं पहचान पाती? ये कैसे कह दिया? हाँ? ये कैसे कह दिया कि शरीर रहते नहीं पहचान पाती? हाँ? उसे कुछ गलतफहमी है। हाँ, बोलो?

जिज्ञासु- दादी प्रकाशमणी ....

बाबा- दादी प्रकाशमणी जो सारा मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ है उसकी जड़ है या बीज है? (सभी-जड़ है) बस, जड़ ही आखिरी है? उससे आगे और कोई कारण नहीं है? अरे, जड़ों का भी कोई बाप है या नहीं है? (सभी- है) तो वो बीज रूप आत्मा नहीं दिखाई पड़ती? प्रकाशमणि दादी जो जड़ में बैठी हुई है, आधारमूर्त है उसकी भी कोई जड़ है उद्धारमूर्त। वो उद्धारमूर्त जो बीजरूप आत्मा है उसका शरीर तो नहीं छूट गया। (किसी ने कहा- नहीं) फिर क्या बात? आधारमूर्त तो ब्रह्मा भी है, उनका भी शरीर छूट गया। फिर प्रवेश तो कर रहा है।

Time: 47.00-48.25

Student: Maya was not able to recognize the Father as long as she was alive. Then how does she acquire the title of Almighty?

Baba: Was she not able to recognize as long as she was alive? How did you say that? Hm? How did you say that she was not able to recognize as long as her body was alive? Hm? He has some misunderstanding. Hm, speak up?

Student: Dadi Prakashmani....

Baba: Is Dadi Prakashmani the root or seed [form Maya] of the entire human world tree? (Everyone: She is the root). Is that all? Is the root the ultimate cause? Is there no reason beyond that? Arey, is there a father of the roots or not? (Everyone said: There is) So, is that seed-form soul not visible to you? There is an uplifting root (*uddhaarmoorth*) of even the root soul (*aadhaarmoorth*), i.e. Dadi Prakashmani who is sitting on the root. That uplifting soul, the seed-form soul has not left its body. (Someone said: No). Then what is the matter? Brahma is also a root soul; he has left his body too. Yet he enters (someone).

48.50-50.25

जिज्ञासु- बाबा ये सृष्टि का जो साइक्लिंग है 5000 वर्ष में ये पूरा होता है तो चंद्र के ऊपर से जो मिट्टी लाई है, क्या वो वापस चंद्र पर जायेगी?

बाबा- और चंद्रमाँ ही इसी धरती में मिल जाये तो? अगर वो चंद्रमाँ जो पृथ्वी के चारों तरफ उपग्रह के रूप में घूम रहा है और पृथ्वी की आकर्षण शक्ति इतना बढ़ जाये कि वो चंद्रमाँ ही

आकरके पृथ्वी में मिक्स हो जाये तो? तो सम्भावना है कि नहीं? (जिज्ञासु- है) है। बस खत्म हो गई बात। अरे, जो चीज जहाँ से आती है वहाँ पे जाती है कि नहीं? (जिज्ञासु- जाती है) ये चंद्रमाँ उपग्रह है ना? उपग्रह माना कहाँ से अलग हुआ है? पृथ्वी से अलग हुआ। पृथ्वी से अलग हुआ तो पृथ्वी का उपग्रह बन गया। पृथ्वी तो ग्रह है लेकिन उसका उपग्रह है चंद्रमाँ। तो चंद्रमाँ है, पृथ्वी के चारों तरफ घूम रहा है, चक्कर काट रहा है। पृथ्वी नहीं चक्कर काटती है चंद्रमाँ के। क्या? चंद्रमाँ चक्कर काटता है। क्योंकि हल्का है, पृथ्वी में आकर्षण शक्ति ज्यादा है। चंद्रमाँ में उतनी आकर्षण शक्ति नहीं है। इसलिए जो चंद्रमाँ पृथ्वी से अलग हुआ है अर्ध विनाश में, त्रेता के अंत में जब सम्पूर्ण विनाश होगा तो फिर मिक्स हो जायेगा।

Time: 48.50-50.25

Student: Baba, the cycle of this world is completed in 5000 years; so, will the soil that has been brought from the Moon go back to the Moon?

Baba: And what if the Moon itself merges with the Earth? What if that Moon, which is revolving around the Earth in the form of a satellite…; and if the attraction of the Earth increases so much that the Moon itself comes and merges with the Earth? Is it not possible? (Student: It is). It is. That is all. The matter ends there. Arey, anything which starts from one place goes back to the same place or not? (Student: It does). This Moon is a satellite, isn't it? Satellite means that it has separated from where? It has separated from the Earth. It has separated from the Earth. So, it became the satellite (*upgrah*) of the Earth. The Earth is a planet (*grah*), but the Moon is its satellite. So, the Moon is revolving around the Earth. The Earth is not revolving around the Moon. What? The Moon revolves because it is light; there is more gravitational force in the Earth. The Moon does not have gravitational force to that extent. This is why the Moon, which has separated from the Earth during the semi-destruction at the end of the Silver Age will mix (i.e. merge with Earth) when the complete destruction takes place.

52.52-53.52

जिज्ञासु- एक अव्यक्त वाणी में बोला है भारतवासी विदेश से ज्ञान और योग में आकर्षित होंगे। इसका अर्थ?

बाबा- माना विदेशी जब बाप को पहचानते हैं तब भारतवासी भी बाप को पहचानते हैं। नहीं तो भारत के कुम्भकरण सोये रहते हैं। विदेशियों के द्वारा भारतवासी इंवेंशन को स्वीकार कर लेते हैं। वो ही इंवेंशन यहाँ होती है तो नहीं मानते हैं।

जिज्ञासु- अभी ये आकर्षण होने का पार्ट अभी बाकी है ना?

बाबा- बिल्कुल अभी भारत के कुम्भकरण जग गये है क्या? उत्तर भारत में ढ़ेर सारे कुम्भकरण बैठे हुए हैं। मुख्य तो बैठी है गंगा तो जग गई क्या? जगेगी।

Time: 52.52-53.52

Student: It has been said in an Avyakta Vani that the Indians will be pulled towards knowledge and yog through the foreigners. What does it mean?

Baba: It means that the Indians recognize the Father when the foreigners recognize Him. Otherwise the Kumbhakarnas of India remain asleep. The Indians accept the invention through the foreigners. If the same invention is made here, they do not accept it.

Student: The part of being pulled is yet to take place, isn't it?

Baba: Certainly; have the Kumbhakarnas of India woken up? There are numerous Kumbhakarnas in north India. The main one is Ganga; has she woken up? She will.

53.53-55.15

जिज्ञासु- बाबा जब किसी आत्मा को हम संदेश देते है एडवांस पार्टी को सन्देश देते हैं जो बेसिक की आत्मा है वो अगर एक बार नहीं मानती तो दुबारा देना चाहिए कि नहीं देना चाहिए?
बाबा- हमे अगर ऐसा लगता है कि हमने ठीक से सन्देश नहीं दिया है तो क्यों नहीं देना चाहिए?
जिज्ञासु- बार-2 देना ठीक है क्या?
बाबा- बार-2 तो देने से ये साबित होता है कि हम लायक नहीं है। हमारे कुल का होगा तो थोड़ा भी सुनेगा तो फटाक से आ जावेगा। हमारे कुल का नहीं है हम बार-2 उसको खींच रहे हैं, बार-2 वो हमारी बात नहीं सुन रहा है। सुनी अनसुनी कर रहा है तो अगर मान लो बहुत मेहनत करके हमने उसको खींच भी लिया तो बाद में अंजाम क्या होगा? वो हमारे कुल का तो है नहीं तो जरूर दूसरे धर्म में कंवर्ट होगा, दूसरे को बाप बनायेगा तो फिर हमको छोड़के जायेगा कि नहीं जायेगा? जायेगा। सन्देश देना हमारा काम है। सन्देश हमने दे दिया है। उसको जब निकलना होगा निकलेगा।

Time: 53.53-55.15
Student: Baba, when we give the message to a soul, when we give the message of the advance party, the soul following the basic knowledge does not accept in the first instance. So, should we give the message once again or not?
Baba: If we feel that we have not given the message properly, then why should we not give (once again)?
Student: Is it ok if we give again and again?
Baba: If you give again and again, it proves that you are not capable. If someone belongs to our clan, he will come immediately on listening even a little. If he does not belong to our clan, if we are pulling him again and again, and if he is not listening to us repeatedly, if he is acting as if he hasn't heard anything, then suppose, we are able to pull him after making a lot of efforts, even so what will be the ultimate result later? He does not belong to our clan; so he will certainly convert to another religion; he will adopt someone else as the Father. So, will he leave us or not? He will. Our job is to give the message. We have given the message. He will come when he has to.

……
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.